

डॉ. ताहिर और वक़ार -ए- मिल्लत

मुफ्तीये आज़म -ए- पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादरी रज़वी के चन्द फतावा जो आप अलैहिर्रहमा ने डॉ. ताहिर पर सादिर फरमाए हैं और मुसलमानों के सामने इस फित्ने की हकीकत को ज़ाहिर किया है।



इस रिसाले में

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल



अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत महरबान और रहमत वाला है

रिसाले का नाम

डॉ. ताहीर और वक़ार -ए- मिल्लत

इफादात

अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद वकारुद्दिन कादरी रज़वी

भाषा

हिन्दी

पेशकश

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

मुख़्तसर तज़किरा -ए- वक़ार -ए- मिल्लत

जामेअ माक़ूलात व मनक़ूलात, पीर -ए- तरीक़त, मुफ्ती -ए- आज़म -ए- पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादरी रज़वी अलैहिर्रहमा अपने ज़माने के मशहूर आलिम -ए- दीन थे। आप की शख़्सियत अहले सुन्नत के आसमान पर एक चमकता सितारा है जिस की रौशनी हमेशा बरक़रार रहने वाली है।

14 सफर उल मुज़फ्फर 1333 हिजरी को पीलीभीत (हिन्दुस्तान) में आप की पैदाइश हुई आप के वालिद का नाम हमीदुद्दीन और वालिदा का इम्तियाज़ -उन- निसा था, आप के वालिद, चचा और खानदान के कई अफ़राद हाफिज़ -ए- क़ुरान थे, इस से मालूम होता है के आप का घराना इस्लामी माहौल के रंग से रंगा हुआ था।

ईब्तिदाई तालीम

स्कूल में पाँचवी (5वीं) क्लास तक तालीम हासिल की और जब पाँचवी क्लास का इम्तिहान हुआ तो पूरे ज़िले भर मे आप को पहला दर्जा हासिल हुआ और इनाम भी मिला।
उसके बाद आपके इसरार पर आप को पीलीभीत के एक मदरसे मे दाखिल करवाया गया।
उस मदरसे मे आप के असातिज़ा में हज़रत मुफ़्ती वसी अहमद मुहद्दिसे सूरती के खास शागिर्द मौलाना हबीबुर रहमान भी थे।
चार साल उस मदरसे मे तालीम हासिल की और फिर बरेली शरीफ के "दारुल उलूम मन्ज़र -उल- इस्लाम" में दाखिला लिया।

बरेली शरीफ में आप ने सदरुश्शरिया, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी, मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा सरदार अहमद क़ादरी, अल्लामा तकद्दुस अली खान, मौलाना सरदार अली खान,और मौलाना एहसान इलाही वगैरा को अपने असातिज़ा के रूप मे पाया।

बै'अत व खिलाफत

आप को हुज्जतुल इस्लाम, हज़रत अल्लामा हामिद रज़ा खान बरेलवी के दस्त पर बै'अत होने का शर्फ हासिल हुआ और उन के छोटे भाई मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिंद से खिलाफ़त भी हासिल हुई।

इल्मी मकाम

आप के इल्मी मकाम का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक गाँव के कुछ लोगो ने मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिंद से कहा गैर मुकल्लिदीन ने हमे परेशान कर रखा है लेहाज़ा आप किसी आलिम को (मुनाज़रे के लिए) भेज दीजिए, मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिंद की निगाहों में जो नाम आया वो वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा का था, आप मुनाज़रे के लिए तशरीफ ले गए और अल्लाह त'आला ने आप को फतह अता फ़रमाई।

आप के मुताले का ये आलम था के पूरी पूरी रात मुताले मे गुज़ार देते थे!

1947 मे आप ने पकिस्तान का रुख कर लिया और फिर वहीं दर्सो तदरीस मे मशगूल हो गए और रोज़गार के सिलसिले मे आप तिजारत करते थे।

आप ने अपने ज़माने मे उठने वाले फित्नों का भरपूर रद्द किया जिस मे एक डॉ. ताहिर का फितना भी है।

विसाल

हदीस की तालीम देते हुए 16 रबीउल अव्वल 1410 हिजरी में आप का इन्तेकाल हुआ।

डॉ. ताहीर और वक़ार -ए- मिल्लत

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद वकारुद्दिन कादरी रज़वी अलैहिर्रहमा की बारगाह मे सवाल किया गया के एक शख़्स ने ख़्वाब देखा जिस मे नबीय्ये करीम ﷺ ने उस से फरमाया के तुम अगर पकिस्तान मे मेरे मेज़बान बन जाओ तो मैं पकिस्तान मे कुछ दिनो के लिए रुक सकता हू, उस शख़्स ने एक रिसाले मे यही ख़्वाब बयान करते हुए कहा के हुज़ूर ﷺ ने पकिस्तान मे मुझे अपना मुस्तकील मेज़बान मुकर्रर कर दिया है, इस जुमले पर कुछ लोग ऐतराज़ करते है और इसे शान -ए- रिसालत मे तौहीन बताते है लेहाज़ा आप से दरख़्वास्त है के शरियत की रौशनी मे फ़तवा सादिर फरमाएं के क्या शख़्स -ए- मज़कूर किसी शरई जुर्म का मुर्तकीब हुआ है या नही?

वकार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा जवाब मे लिखते हैं के ताहीरुल कादरी का ये ख़्वाब नवाये वक्त लाहौर, तक्बीर और दीगर रसाईल मे छपा है।
हकीकत ये है के ख्वाब इंसान के इख्तेयार मे नही और इन्सान ख़्वाब मे अजीबो गरीब ऊमूर भी देखता है मगर अपनी फ़ज़ीलत के लिए किसी ख़्वाब को छापना या बयान करना, ये इन्सान का इख्तेयारी फे'ल है लिहाज़ा ताहिरूल कादरी का ख़्वाब बयान करते हुए ये कहना के हुज़ूर ﷺ ने पकिस्तान मे मुझे अपना मुस्तकील मेज़बान मुकर्रर कर दिया है और वापसी के टिकट का भी मुतालबा किया है और बहुत सी बातें बयान की जिन मे हुज़ूर ﷺ के मोहताज होने और ताहीरुल कादरी से मदद तलब करने और एक उम्मती के मुकाबले मे नबी की मुहताजी का इज़हार होता है लिहाज़ा ये तौहीन -ए- नबी ﷺ है और तौहीन करने वालो की जो सज़ा है ताहीरुल कादरी उस सज़ा का मुस्तहिक है।

(ملخصًا: وقار الفتاوی، ج1، ص324، 325)

वकार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा से दूसरे मकाम पर सवाल किया गया के प्रोफेसर ताहीरुल कादरी अहले सुन्नत व जमात से तअल्लुक रखते हैं या नहीं? और हमे इन के बारे मे क्या राऐ रखनी चाहिए? इनके बारे मे एक रिसाले मे पढ़ा है के ये देवबंदीयो के पीछे नमाज़ को जाएज़ समझते है और उन से जो ईख्तेलाफात है उसे फूरूइ गर्दानते है तो इस का वाज़ेह मतलब ये है के ये गुस्ताखान -ए- रसूल ﷺ को काफिर नही समझते और इन के नज़दीक ईहतेराम -ए- रसूल ﷺ भी फूरूइ मस'अला है, तो क्या ये शख़्स

"مَن شك فی کفرہ و عذابہ فقد کفر"

(जो ईन गुस्ताखान -ए- रसूल के कुफ़्र और अज़ाब मे शक करे वो काफिर है) के तहत आएगा या नही?

आप अलैहिर्रहमा जवाब मे लिखते है के प्रोफेसर ताहीरुल कादरी का कहना यही है के ये इख्तिलाफात फूरूइ है।
28 सितंबर 1987 के जंग अखबार मे ये खबर छपी है इन्होने होटल मे औरतो से खिताब किया, एक खातून ने जब इन से सवाल किया के जब इस्लाम इत्तेहाद का दर्स देता है तो फिर इतने फिर्के क्यू?
इस पर प्रोफेसर ताहीरुल कादरी साहब ने जवाब दिया की तमाम फिर्को की बुनियाद एक है, सिर्फ जुदा जुदा तरीका है इसलिए इत्तेहाद मुतास्सीर नही होता और इन्होने अपने इंटरव्यूव मे पहले भी कहा था के इनके यहाँ दो मुदर्रस देवबंदी है और एक शिया है लिहाज़ा इसी से अंदाज़ा कर लीजिए के इनके खयाल मे और "नदवा" वालो के खयाल व एतिकाद मे क्या फर्क है।

(وقارالفتاوی، ج1، ص325، 326)

वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा से एक और मक़ाम पर सवाल किया गया की ज़ैद कहता है कि डॉ. ताहिरुल क़ादरी एक सच्चे आशिक़ -ए- रसूल हैं और इख्लास के साथ दीन की खिदमत करने वाले हैं, मुझे ताहिरुल क़ादरी की इस बात (कि देवबन्दियों के पीछे नमाज़ जायज़ है) के इलावा तमाम बातों से इत्तिफाक़ है और मैं इनके कामों से मुतमईन

हूँ और इन्हें बद मज़हबों का चाहने वाला नहीं समझता लिहाज़ा ये इरशाद फरमायें कि :
(1) क्या ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है?
(2) ज़ैद के और अहले सुन्नत के अक़ाइद में जो फर्क़ है उसे वाज़ेह फरमा दें।

वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि इस ज़माने में इस्लाम का दावा करने वाले मुख्तलिफ गिरोह हैं और हर एक यही दावा करता है कि मैं आशिक़ -ए- रसूल हूँ मगर किसी शख्स के स्टेज पर (दिये गये) बयानात से उसके अक़ाइद का पता नहीं लगाया जा सकता है।
किसी शख्स के अक़ीदे और मज़हब का पता उसकी तहरीरों से चलता है, ताहिरुल क़ादरी बहुत ज़माने से अपने इंटरव्यूस में ये कहता रहा है कि शिया, देवबन्दी, गैर मुक़ल्लिद और बरेलवी चारों मज़ाहिब में फ़ुरूयी इख्तिलाफ़ात हैं! इनमें उसूली इख्तिलाफ़ नहीं।

इसका मतलब ये हुआ की हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा पर तोहमत लगाना, हज़रते अबू बकर वा हज़रते उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा को खलीफा -ए- बर हक़ ना जानना, इनकी खिलाफत का इंकार करना, क़ुरान -ए- करीम को बयाज़े उसमानी समझना, ये तमाम बातें प्रोफेसर साहब की नज़र में फ़ुरूयी हैं, हालांकि खिलाफत -ए- अबू बकर के हक़ होने पर सहाबा -ए- किराम का इज्मा है और इज्मा -ए- सहाबा का मुनकिर काफ़िर है।
हज़रते आइशा सिद्दीक़ा पर तोहमत लगाने वाला क़ुरान का मुनकिर है और क़ुरान को बयाज़े उसमानी कहने वाला भी काफ़िर है।

ताहिरुल क़ादरी ने अपने इस अक़ीदे की खुलकर ताईद कर दी है। मिन्हाजुल क़ुरान जो इनका अपना रिसाला है उसके दिसम्बर 1990 के शुमारे में छपा है :
मौजूदा नाज़ुक हालत में अहले तशी को काफ़िर क़रार देने वाले और भोले भाले मुसलमानों में इसका प्रोपगन्डा करने वाले खुद परस्त इन्तिहा पसन्द मौलवी साहिबान तो हो सकते है, अहले सुन्नत व जमा'अत हरगिज़ नहीं हो सकते।

इसके चन्द सुतूर बाद लिखा है:
इस हक़ीक़त -ए- बाहिरा और बुरहान -ए- क़ातिआ के बावजूद अहले तशी को बिल मज्मू काफ़िर समझना, कहना या क़रार देना मुतलक़न बातिल है, बिल्कुल इस नहज पर कोई फ़िरक़ा या कोई फ़र्द अहले सुन्नत को काफ़िर समझे, कहे या क़रार दे वो भी क़तयी तौर पर बातिल होगा।
दर हक़ीक़त हनफ़ी, देवबंदी, बरेलवी, शिया, मालिकी, हम्बली, शाफयी, और अहले हदीस सब के सब मुसलमान हैं, इन फ़िरक़ों में फ़ुरूयी इख़्तिलाफ़ तो बहर तौर मौजूद हैं मगर बुनियादी इख़्तिलाफ़ कोई नहीं।
देवबंदियों की तौहीन -ए- नबी पर मुश्तमिल वो किताबें जिन पर उलमा -ए- हरम, शाम वा मिश्र ने हुक्मे तक्फ़ीर किया और ये लिखा :

"مَن شك فى كفره و عذابه فقد كفر"

जो इसमें शक करे वो भी काफ़िर है।

वो किताबें अब तक इसी तरह छप रही हैं, प्रोफेसर के नज़दीक ये भी फ़ुरूयी इख़्तिलाफ़ हैं।
इन चन्द मिसालों से ये ज़ाहिर हो गया कि प्रोफेसर साहब का एक नया मज़हब है और इनके मज़हब के मुताबिक़ इन बातिल फ़िरक़ों और अहले सुन्नत में कोई फ़र्क़ नहीं है, वो सबको मुसलमान समझते हैं और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ समझते हैं।
अगर ज़ैद का कौल ना वाक़िफी की बिना पर है तो उसे समझना चाहिये और उनको आशिक़ -ए- रसूल के बजाये इस्लाम का बरबाद करने वाला कहना चाहिये, अगर ज़ैद जान बूझकर ऐसा करता है तो उसका भी वही हुक्म है जो उलमा -ए- हरमैन ने बयान किया है लिहाज़ा उसकी इमामत बातिल वा नाजायज़ है, मुसलमानों को इससे इज्तिनाब करना चाहिये।

(وقارالفتاوی، ج1، ص326 تا 328)

वक़ार -ए- मिल्लत अलैहिर्रहमा से एक सवाल ये किया गया कि इदारा -ए- मिन्हाजुल क़ुरान के बानी प्रोफेसर ताहिरुल क़ादरी का प्रोग्राम मसलक -ए- अहले सुन्नत की तरवीजो तरक़्क़ी के लिये है या नहीं? और जो मौलवी प्रोफेसर ताहिरुल क़ादरी के हम खयाल हैं वो मसलक -ए- अहले सुन्नत से ताल्लुक़ रखते हैं या नहीं? ऐसे मौलवियों के पीछे नमाज़ पढ़ना शरयी लिहाज़ से दुरुस्त है या नहीं?

आप अलैहिर्रहमा जवाब में फरमाते हैं कि ताहिरुल क़ादरी ने जब ये कहना शुरू किया कि बरेलवी, देवबंदी, गैर मुक़ल्लिद और शिया के इख़्तिलाफ़ात फ़ुरूयी हैं और सबको मुसलमान शुमार किया तो इससे ज़ाहिर हो गया कि वो पाकिस्तान में नया "नदवा" क़ाईम कर रहा है और इसके नज़दीक हज़रते अबू बकर व हज़रते उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा को गाली देना और हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा पर तोहमत लगाना भी फ़ुरूयी बात है और इसके नज़दीक ये लोग मुसलमान हैं और जिन लोगों की किताबें तौहीन -ए- नबी से भरी पड़ी हैं उनको भी मुसलमान क़रार देना इनके मज़'उमा फ़ुरूयी इख़्तिलाफ़ का नतीजा है लिहाज़ा ऐसा शख्स सुन्नी कैसे हो सकता है? और अब हाल ही में जिन पार्टियों से इत्तिहाद किया है उससे भी ये हक़ीक़त आश्कार हो जाती है।

ये शख्स सुन्नियत को तबाह करने वाला है।
अहले सुन्नत से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं है, इसके हम खयाल मौलवी और हम नवा मौलवी, इमाम, इमामत के लायक़ नहीं।
अहले सुन्नत इनसे अपने ताल्लुक़ात मुन्क़ता कर लें।
(وقار الفتاوی، ج1، ص328)

مَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ

عبد مصطفى
AM ABDE MUSTAFA
अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुहम्मद साबिर इस्माईली क़ादरी रज़वी
February 2019

ABDE MUSTAFA OFFICIAL'S NETWORK ON SOCIAL MEDIA


/Abdemustafapage


/+919102520764


/abdemustafaofficial & /abdemustafalibrary


Abdemustafa78692@gmail.com


Abdemustafaofficial.blogspot.com


/abdemustafaofficial

- Join our team

ABDE MUSTAFA OFFICIAL



डॉ. ताहिर और वक़ार -ए- मिल्लत

मुफ्तीये आज़म -ए- पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादरी रज़वी के चन्द फतावा जो आप अलैहिर्रहमा ने डॉ. ताहिर पर सादिर फरमाए हैं और मुसलमानों के सामने इस फित्ने की हकीकत को ज़ाहिर किया है।

इस रिसाले में



अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

डॉ. ताहिर और वक़ार -ए- मिल्लत



ABDE MUSTAFA OFFICIAL'S NETWORK
ON SOCIAL MEDIA


/Abdemustafapage


/+919102520764


/abdemustafaofficial & /abdemustafalibrary


Abdemustafa78692@gmail.com


Abdemustafaofficial.blogspot.com


/abdemustafaofficial

•Join our team

ABDE MUSTAFA OFFICIAL